अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

समय : 3 घण्टे | अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) ....

(शब्दों में) ....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) निर्वाण का सार क्या है -

(क) अनन्त ज्ञान (ख) अनन्त दर्शन

(ग) अव्याबाध सुख (घ) वीतरागता ( )

(b) ''आगार'' का मूल नाम क्या है-

(क) आचारांग (ख) प्रज्ञापना

(ग) भगवती (घ) अंतगढ़ ( )

(c) आचारांग सूत्र के उद्देशक कितने हैं-

(क) 80 (ख) 82

(ग) 85 (घ) 88 ( )

(d) जितशत्रु किस नगरी का अधिपति था -

(क) श्वेताम्बिका (ख) द्वारिका

(ग) श्रावस्ती (घ) हस्तिनापुर ( )

(e) बंध के कितने प्रकार हैं -

(क) 12 (ख) 16

(ग) 08 (घ) 04 ( )

(f) आत्म-विस्मण को कहते हैं-

(क) आलस्य (ख) कामचोर

(ग) प्रमाद (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(g) सातवीं नरक में समुच्चय बंध कितनी प्रकृतियों का होता है-

(क) 101 (ख) 100

(ग) 98 (घ) 99 ( )

(h) ''जिननाम कर्म'' प्रकृति का बंध कौनसे गुणस्थान से प्रारम्भ होता है-

(क) 4 (ख) 5

(ग) 6 (घ) 7 ( )

(i) कर्मग्रन्थ की अपेक्षा तेउकाय, वायुकाय में कितने गुणस्थान होते हैं-

(क) 1 (ख) 2

(ग) 3 (घ) 4 ( )

(j) ''हो'' शब्द का अर्थ होता है -

(क) बैठना (ख) होना

(ग) सुनना (घ) पालना ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) संज्ञा का अर्थ 'चेतना' होता है। ( )

(b) जो कर्मरहित शुद्ध आत्मदर्शी है, वह निष्कर्मदर्शी है। ( )

(c) सूर्याभ विमान में राजा प्रदेशी का जीव उत्पन्न हुआ। ( )

(d) आत्मा को केवलज्ञानी देख सकते हैं। ( )

(e) 'घृणा' खत्म करने वाला कर्म जुगुप्सा नहीं है। ( )

(f) अबाधाकाल पूर्ण नहीं होने पर भी अनुभाव फल देता है। ( )

(g) चित्त में मृदुता और व्यवहार में विनम्रता का होना 'आर्जव' है। ( )

(h) वैक्रिय मिश्र काययोग में आयुष्य का बंध नहीं होता है। ( )

(i) तेउकाय, वायुकाय उच्च गोत्र को नहीं बांधते हैं। ( )

(j) अभवी में गुणस्थान पहला ही नहीं होता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं सम्बन्ध का बोध कराती हूँ। ....

(b) मैं संधि का दूसरा प्रकार हूँ। ....

(c) मैं संयम सापेक्ष प्रकृति हूँ। ....

(d) मेरे द्वारा एकाग्रतापूर्वक शरीर और वचन के व्यापार को छोड़ा जाता है। ....

(e) मैं पाँच इन्द्रियों के विषयों की उत्पत्ति का मुख्य साधन हूँ। ....

(f) मैं शब्दों व रूपों में अनासक्त रहता था। ....

(g) मैं दुःख का मूल कारण हूँ। ....

(h) मेरे पुत्र का नाम 'सूर्यकान्त' था। ....

(i) मैं आकाशास्तिकाय आदि को भी देख सकता हूँ। ....

(j) मैंने अपने पति को विष देकर मार डाला। ....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2=(28)**

(a) ''आयार'' व ''आचाल'' शब्द को परिभाषित कीजिए।

....

....

(b) आचारांग के द्वितीय अध्ययन का सार लिखिए।

....

....

(c) आचार्य शीलांक ने ''मोहजन्य परीषह'' की क्या व्याख्या की है ?

....

....

(d) आचारांग सूत्र में आठवाँ अध्ययन विमोह क्यों रखा ?

....

....

(e) आत्मा को जानने के तीन साधन में से कोई दो साधन लिखिए।

....

....

(f) नारकी जीवों की इच्छा होते हुए भी उनके मनुष्य लोक में नहीं आ सकने के कोई दो कारण लिखिए।

....

....

(g) छद्मस्थ जीव किन-किन 10 वस्तुओं को नहीं देख सकता है ?

....

....

(h) अनुभाव बंध को परिभाषित कीजिए।

....

....

(i) 6 संहननों के नाम लिखिए।

....

....

(j) आदेय व अनादेय को परिभाषित कीजिए।

....

....

(k) प्रथम नारकी में समुच्चय से किन 19 प्रकृतियों का बंध नहीं होता है ?

....

....

(l) तिर्यंच गति व मनुष्य गति में लब्धि अपर्याप्त का बंध स्वामित्व लिखिए।

....

....

(m) षष्ठी विभक्ति से सम्बन्धित दूसरा नियम लिखिए।

....

....

(n) अवयव किसे कहते हैं ?

....

....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) आचारांग सूत्र के चतुर्थ अध्ययन के तृतीय उद्देशक में साधक को क्या उपदेश दिया गया है ?

....

....

....

....

(b) सच्चा मुनि कौन है ? आचारांग के पंचम अध्ययन के अनुसार स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

(c) ''भावना'' चूलिका में किसका वर्णन किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

(d) द्रव्य एवं भाव दिशा के नाम लिखिए।

....

....

....

....

(e) प्रमाद को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

....

(f) 'स्त्यानगृद्धि' निद्रा को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

(g) त्रस और स्थावर दशक की प्रकृतियों के नाम लिखिए।

....

....

....

....

(h) आठ कर्मों की जघन्य स्थिति बन्ध के अधिकारी कौन-कौन होते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

(i) सभी निर्ग्रन्थों में लेश्या द्वार लिखिए।

....

....

....

....

(j) व्युत्सर्ग के भेदों को समझाइए।

....

....

....

....

(k) औदारिक मिश्र काय योग का बंध-स्वामित्व लिखिए।

....

....

....

....

(l) **तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या में समुच्चय बंध की प्रकृतियों की संख्या तथा उन-उन में छूटने वाली प्रकृतियाँ लिखिए।**

....

....

....

....

(m) **अनाहारक मार्गणा का बंध-स्वामित्व लिखिए।**

....

....

....

....

(n) **पाठ्य पुस्तक के आधार पर असमान स्वर सन्धि का नियम लिखते हुए इसके पाँच उदाहरण अर्थ सहित लिखिए।**

....

....

....

....